निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष ३ अंक १६ | नवम्बर-दिसम्बर १९८४

क्षमा प्रार्थना

मैं निर्दोषी बालक आपका, मैं निर्दोषी बालक
फिर भी यदि कुछ भूल हुई हो, क्षमा करें हे क्षमादायिनी

क्षमा करें हे प्रभु गणेश जी, क्षमा करें कुण्डलिनी मां जी
क्षमा करें हे मातु सरस्वती, क्षमा करें मां लक्ष्मी जी
क्षमा करें हे प्रभू शेष जी, क्षमा करें इस बालक को—१

मैं निर्दोषी बालक आपका, मैं निर्दोषी बालक

क्षमा करें गुरु दत्तात्रेय जी, क्षमा करें मां पार्वती जी
क्षमा करें जगदम्बे मां जी, क्षमा करें मां सीता जी
क्षमा करें विष्णु ग्रंथिविभेदिनी, क्षमा करें इस बालक को—२

मैं निर्दोषी बालक आपका, मैं निर्दोषी बालक

क्षमा करें हे प्रभु विराट जी क्षमा करें मां राधा जी
क्षमा करें हे यशोदा मां जी, क्षमा करें विष्णु माया जी
क्षमा करें हंसवक्र स्वामिनी, क्षमा करें इस बालक को—३

मैं निर्दोषी बालक आपका, मैं निर्दोषी बालक

क्षमा करें प्रभु बुद्ध महावीर जी, क्षमा करें मां मेरी जी
क्षमा करें हे मोक्षप्रदायिनी, क्षमा करें सहस्रार स्वामिनी जी
क्षमा करें हे निर्मल मां जी, क्षमा करें इस बालक को—४

मैं निर्दोषी बालक आपका, मैं निर्दोषी बालक
फिर भी यदि कुछ भूल हुई हो, क्षमा करें हे क्षमादायिनी

—आर० आर० सिंह, पुणे

सम्पादकीय

बूंद अपने को सागर में समाहित करके ही सागर को समझ सकता है तथा उसका आनन्द उठा सकता है।

उसी प्रकार परमात्मा को समझने के लिए आत्मा और परमात्मा का एकीकरण आवश्यक है। यह कार्य श्री माताजी वर्षों से कर रही हैं। हम सभी का यह परम पुनीत कर्त्तव्य है कि कुण्डलिनी जागृति द्वारा स्वयं अपने आपको उस परमपिता परमेश्वर में समाहित करके परमानन्द को प्राप्त करें तथा इस कार्य में परमपूज्य परमेश्वरी आदिशक्ति श्री माताजी के कार्य में हर सम्भव सहायता के लिए अपने आपको समर्पित करें। यही हमारी साधना और भक्ति है।

ओम त्वमेव साक्षात् परम परमेश्वरी आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी नमो नमः।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी हायनेक
३१५१, हीदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के२

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ..... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. परमपूज्य माताजी का प्रवचन ... ३
४. प्रचार कार्य ... ९
५. सहजयोग और कल्की शक्ति (परमपूज्य माताजी का प्रवचन) ... १०
६. निर्मल वाणी ... १९
७. आत्म कथ्य ... २२
८. कविता ... २३
९. भजन ... २४
१०. क्षमा प्रार्थना ... द्वितीय कवर
११. मानव चेतना यंत्र ... तृतीय कवर
१२. अनन्त जीवन के गीत ... चतुर्थ कवर

परमपूज्य श्री माताजी का प्रवचन

सहज मंदिर, नई दिल्ली
७ मई १९८३

आपका चित्त अगर इन (बाह्य) चीजों में उलझा रहेगा, तो ठीक बात नहीं है। इसलिए इन सब चीजों को छोड़कर अपने चित्त को अपने हृदय में लाते हुए आत्मा की ओर करें। चित्त आत्मा की ओर रखें। कभी कभी हम सोचते हैं कि हम अगर ज्यादा रूपया कमा लें तो बड़ा भारी कमाल कर देंगे। लेकिन जो लोग बहुत रूपया कमाते हैं, आप उनकी हालत देखिए। यह नहीं कि आप रूपया मत कमाइए। लेकिन आपके जीवन का लक्ष्य रूपया कमाना नहीं है। आपके जीवन का लक्ष्य अपनी आत्मा को पाना है। आत्मा को पाते ही बाकी सब चीजें खत्म हो जाती हैं। 'अपने आप' बाकी की सब चीजें घटित हो जाती हैं। इसलिए पहले यह सोचना चाहिए कि हमारा चित्त आत्मा में रहे। जैसे कि नामदेव ने एक बहुत सुन्दर कविता लिखी है। उस कविता में उन्होंने लिखा है कि एक लड़का आकाश में पतंग उड़ा रहा है, और वह दोस्तों से बात-चीत भी कर रहा है, इधर उधर देख भी रहा है, लेकिन उसका सारा चित्त पतंग की ओर है। एक मां है, अपने बच्चे को गोद में लेकर सारा काम कर रही है, कभी झुकती है, कभी कुछ और कार्य करती है, लेकिन, उसका पूरा चित्त बच्चे की तरफ है। उन्होंने कहा है कि एक औरत अपने सिर पर मटकी रखकर चल रही है, उसकी सहेलियां उसके साथ चल रही हैं, बातें कर रही हैं, इधर-उधर की बातें हो रही है, वो हंसती भी हैं, लेकिन उसका पूरा चित्त उस मटकी की ओर हैं। तो पहली बात यह है कि चित्त को अपनी आत्मा में रखें। माने जिस चीज में हम बहुत ज्यादा उलझे हुए हैं उसको आप हटा लें, नहीं तो ये चित्त जो है वह पूरी तरह से इधर-उधर हो जाएगा।

उसके लिए आपको ध्यान-धारणा करनी चाहिए। ध्यान-धारणा करने से आपका चित्त आत्मा में ही रहेगा। अभी तक तो आप आत्मा की ओर देखते हैं, जब आत्मा चित्त हो जाती है तो आप आत्मा में साक्षीस्वरूप हो जाते हैं। हर चीज आपको काफी बड़ी dimension (गहनता) में दिखाई देती है।

आज हम गये थे कश्मीर ऐम्पोरीयम और वहाँ पर बहुत से लोगों को पार किया। तत्पश्चात् वहाँ पर कुछ लोग (कर्मचारी) इसी ताक में हैं कि कब लोग जावें कि हम बन्द करें। तभी किसी ने कहा कि "माता जी आज जरूर अपने यहाँ आयेंगी।" "माताजी यहीं हैं और आज आने वाली हैं।" यह उसे कैसे पता चला ? कारण कि जब व्यक्ति अपनी गहनता में जाता है तो उसकी गहनता में ही सारी सामूहिक चेतना है। वहाँ सब तरह के tele-communications (दूरसंचार) हैं। सब तरह के इन्तजामात हैं। जब मनुष्य उस सतह में बैठता है तो वह फौरन सब कुछ जान जाता है। लेकिन जब तक आप उस सतह तक नहीं पहुँचते तभी तक तो आपको परेशानी है। यदि आप उस सतह में पहुँच जाएं तो किसी भी चीज की परेशानी नहीं रह जाती। आप निर्विचारिता में रहते हैं।

लेकिन जब आप हमेशा यह सोचते हैं कि मुझे इतना रुपया कमाना है, मुझे नौकरी लेनी है,

मुझे चुनाव लड़ना है इत्यादि, जैसे-जैसे आपका चित्त इन चीज़ों में पड़ता है, वैसे-वैसे आपकी मानसिकता अवरुद्ध हो जाती है। आप बढ़ नहीं सकते।

अब तो हम जा रहे हैं, हमारा तो काम यही है कि आप लोगों को ठेलते रहें, ताकि आपको ठेलना आए, और आप लोग उसका मज़ा उठाएं। आप अपनी ओर चित्त रखें। आप जब अपने को ठेलते रहिएगा तो आपकी आत्मा जो आपके अन्दर विराजमान है, वो जागृत होगी और वही आपको मार्गदर्शन देगी, और आप लोग एक बड़े सन्तोष में रहेंगे। यह सब बहुतों में घटित हो गई है, बहुतों में हो रही है, और बहुतों में होने वाली है।

इस प्रकार सबको यही सोचना चाहिए कि हम को यह काम करना है, यह चीज करनी है, ये चीज है। और जितनी भी हमारे यहाँ त्रुटियां हैं या जो भी चीजें हैं, उनसे उलझने की जरूरत नहीं है। यदि उनसे भी हम घबराते रहेंगे तो उसमें भी फंस सकते हैं। अतः उस ओर चित्त ले जाने की आवश्यकता नहीं है। हम अपनी आत्मा की ओर चित्त रखें।

एक दूसरी बात और है कि हमारा संतुलन हमारे अन्दर है या नहीं। यानी हमारा धर्म अन्दर प्रज्ज्वलित है या नहीं। समझ लीजिए, कोई आदमी right sided है, बहुत सोचता है, तो उसे थोड़ा अपने को left side में ले जाना चाहिए। यदि कोई left sided है, तो उसे चाहिए कि अपने को सन्तुलन में रखे।

अब यह चक्करबाजी है, यदि आदमी right side में चला जाता है तो वह चक्कर में फंस जाता है, तो उसे ध्यान नहीं रहता कि मुझे किस ओर लौटकर सहज मार्ग में उतरना है। बस जो चक्कर चला, तो चला। गोल-गोल घूमकर जब बिल्कुल आखिर में पहुँचे, तो पता चला कि सब चैतन्यलहरी (वाइब्रेशन) खो गये, शक्ल-सूरत बदल गई, और सब बेकार चला गया।

उसी प्रकार left side की बात है कि आप भावुकता में बह गये, और तब भी उसी प्रकार हो गया।

अतः अपने अन्दर का जो धर्म है उसे संभालिए। इसके लिए कोई भी अतिक्रमण (extremes) करने की जरूरत नहीं है। कोई भी ऐसा काम करने की जरूरत नहीं है, जिससे आपके अन्दर अतिक्रमणता (extremity) आए। यदि आपके अन्दर है, तो उसे छोड़ने की कोशिश कीजिए। यदि आप बहुत ही किसी चीज से तिरस करते हैं, तो उसे छोड़ने की कोशिश कीजिए। और मध्य में आने की कोशिश कीजिए जहाँ से मध्य बिन्दु, से, आप पूरी परिधि पर देख सकते हैं।

अगर आप मध्य बिन्दु से हटकर right (दाहिने) में चले गये, या left (बांये) में चले गए, तो सारा ही balance (संतुलन) खत्म हो जाएगा।

तो दो चीज़ों की ओर बहुत ध्यान रखना चाहिए, कि हमारा चित्त आत्मा की ओर है या नहीं, और हम संतुलन में हैं या नहीं।

बहुत से लोग सोचते हैं कि, "माँ हमें तो बहुत काम करना पड़ता है। क्या करें? हमें ये भी करना है, और वो भी करना है। Promotion (पदोन्नति) नहीं हुई, demotion (अवनति) हो गया। हमारा ये हो गया, वो हो गया।" इसमें एक मंत्र आप आसानी से समझ सकते हैं कि "जैसे राखहूं, तैसे ही रहहूं"–जैसे रखे, वैसे ही रहें। रखने वाला 'वो' है। 'वो' जानता है कि आप कौन हैं। आप साधु-संत हैं, आप योगीजन हैं, वो जानता है, आप को कैसे रखना है। आप लोग कभी-कभी सोचते हैं कि हमारे पास

अगर पैसा कम है, तो "उसने हमारे लिए क्या किया ?" अगर हमारे सामने कोई समस्या खड़ी हो गई तो फिर "भई भगवान ने हमारे लिए क्या किया ?"

ये तो आपकी अपनी दिमागी समस्याएं हैं। परमात्मा ने आपके लिए कोई समस्या नहीं रखी है। आप उसे अपनी समस्या समझें तो अच्छा है। लेकिन जैसे ही ये आपके अन्दर आ जाए कि "जैसे राखूं तैसे ही रहूँ" वैसे आपका कल्याण हो जावे।

अब आप तो माँ को जानते ही हैं, हमें यहाँ सुला दीजिए, हम सो जाएंगे। वहाँ बैठे हम तो भई comfort (आराम) नाम की चीज जानते नहीं। ये तो आप जानते हैं हमारे बारे में।

उसी प्रकार आपको जो है, अपने शरीर को इस level (स्तर) पर लाना चाहिए कि, "साहब आप जो हैं, अब परमात्मा के सामने हैं, इसलिए ज्यादा नखरे करने की जरूरत नहीं है।" और दूसरे शरीर को कष्ट भी नहीं देने चाहिए। बीचों-बीच रहना चाहिए। शरीर को अति कष्ट भी देना नहीं चाहिए और शरीर को 'बहुत' ज्यादा आराम देने की भी कोई बात नहीं। सहजयोगियों के लिए जरूरी है कि किस तरह से अपने शरीर को संभाल कर रखें।

जैसा मैंने आपको मन के लिए भी कहा है। मन अगर बहुत किसी चीज की ओर दौड़ता है, ऐसी जगह जहाँ वो बहुत दौड़ता है, उसको रोकना चाहिए। और ये मन जो है बहुत से बहाने खोज करके आपको 'कमजोर' बनाता है। तो अपनी शक्ति आप खो देते हैं। ऐसे मन से आप कहना कि, "मुझे वो चीज करनी ही नहीं जो तू चाहता है।" तब आपका धीरे-धीरे मन भी बीच में आ जाएगा। क्योंकि मन भी गधे जैसा होता है। अगर मन के आगे आप चलिए तो आपको सान दे देगा। अगर उसके पीछे चलिए तो वो आपको लात मार देगा। इसलिए आपको बहुत संभल कर रहना चाहिए कि आप मन पर सवार रहें। ये नहीं कि मन आप पर, मतलब गधा आप पर, सवार रहे। ये गलत बात है।

तो मन हमारा यहाँ बह गया—'मुझे ये शोक है, मैं क्या करूं ? अब मुझसे नहीं होता। मैं नहीं कर सकता। मुझसे नहीं बनता।" ये अगर कहा, तो रह जाइये। इसमें नुकसान आपका है, और किसी का नुकसान नहीं। क्योंकि आप सहजयोग में आए हैं, परम् पाने के लिए। और जो परम पाने के लिए आए हैं, उनको परम पाना चाहिए। और बाकी तो सब चीज व्यर्थ है।

अब रही बात अति-कर्मी लोगों की, "मुझे बहुत कार्य है। मुझे ये काम करना है।" रोज ये सोचना चाहिए अपने मन में कि हमने आज दिन में सहजयोग के लिए कौन-सा काम किया।

अपने लिए तो कर भी लेते हैं, कि हाथ ऐसे कर लिए, मां से वाइब्रेशन ले लिए। "माँ हमको ठीक कर दो। मेरे पति को ठीक कर दो। मेरे बेटे को ठीक कर दो। मेरे फलाने को ठीक कर दो।" माँ की तो मेहनत चली गई, पर 'आप' ने सहज-योग के लिए कौन-सा कार्य किया ? इसके बारे में थोड़ा-सा आपको सोचना चाहिए कि "आज सहजयोग के बारे में मैंने ये सोचा कि ऐसा होना चाहिए।" अपने विचार 'आप' ही के अन्दर से विचार आएंगे, आप ही के अन्दर से योजनाएं आएंगी। इसलिए देखना कि मेरे दिमाग में ये योजनाएं आई कि "ऐसा हो जाए तो अच्छा रहेगा। ऐसी योजना हो तो अच्छा होगा।" नहीं तो रात-दिन यही रहेगा कि "मेरी नौकरी का क्या हुआ ? मेरे उसका क्या हुआ ?"

आपको ये भी सोचना चाहिए कि सहजयोग में जो आपने नौकरी ली है, उसका क्या करना है ?

परमात्मा के जो नौकर आप लोग हैं, उसकी चाकरी जो कर रहे हैं, उसमें आपने क्या किया ? इस तरफ जरूर ध्यान देना चाहिए।

फिर मन में भी ये सोचना चाहिए कि जब हम मन से कोई कार्य करते हैं तो क्या हम, किसी के प्रति जो कर रहे हैं, ये क्या हम वास्तव में प्रेम में कर रहे हैं, या यूं ही कर रहे हैं ? अगर हम प्रेम में ही ये कार्य कर रहे हैं, तब तो हम सहज-योगी हैं। लेकिन अगर हम इसलिए ही ये कार्य कर रहे हैं क्योंकि हमारा मन हमें बाहर बहका चला ले जा रहा है। ये तो गलत बात है। इस-लिए मन को control (वश में) करने के लिए भी मन से ये पूछो "क्या तुम ये सब काम प्रेम में कर रहे हो ?"

समझ लीजिए आपको इच्छा हुई कि आप 'बहुत' खाना खाएं। समझ लीजिए आपने कहा साहब क्या करें ? हमें इच्छा हो रही है, हमने खा लिया।

लेकिन पूछिये कि "क्या आप अपने प्रेम के लिए कर रहे हैं ? क्या आप अपने शरीर के लिए प्रेम करते हैं ? तो क्या आपको इतना खाना चाहिए ? या क्या अपने को इतना नुकसान कर लेना चाहिए ?" हर चीज में अगर आप एक ही लगाएं कि "हम क्या ये चीज प्रेम के लिए कर रहे हैं ?" तो आप अपने मन को पूरी तरह से जीत सकते हैं। यानि आप उस गधे के ऊपर बैठ सकते हैं, जो गधा आपको बहका रहा है, वही आपको वहाँ पहुँचा देगा जहाँ आपको पहुँचना है।

अब जो मनुष्य के आगे, एक और भी आपके सामने बातें हैं, जो मैं हमेशा रोज-रोज सुनती हूँ कि हम लोगों के गुरूओं के जो चक्कर हैं; फलाने गुरू के पास हम गये थे, उस गुरू के पास हम गये थे, ऐसा हुआ था.....। उसमें से कुछ लोग तो मार खाए हुए हैं। जो मार खाए हैं, वो अच्छे हैं। क्योंकि वो झट से गुरू-वुरू छोड़ देते हैं। और जो समझदार हैं, वो भी सोचते हैं कि भई मैंने तो अब सहजयोग में पा लिया है। अब मुझे किसी के पास जाने की जरूरत नहीं। लेकिन जो अधूरे लोग होते है, वो आये तो इधर गुरू को चिपटते हैं, और इधर सहजयोग में। ये नहीं कि हम गुरू को नहीं मानते हैं। गुरू होना तो बहुत अच्छी चीज है, लेकिन सतगुरू बहुत कम हैं, और झूठे ही गुरू अधिक हैं। और जब आप ही अपने गुरू हो गए, आप अपने अन्दर आत्मा हो गए, तब आपको किसी भी गुरू की शरण में जाने की जरूरत नहीं। आप अपनी आत्मा को पाएं और उसमें ही जितने सतगुरू हैं सब हैं। इसलिए ये जो गुरूओं का चक्कर है ये बड़ा कठिन है।

अगर कोई आदमी पहले-पहल सहजयोग में आ जाए और आप उससे कहें, "साहब आप दूसरे गुरू को छोड़िये," तो मार बैठेगा वो। इसलिए बहुत संभल करके ऐसे लोगों से बात करनी चाहिए कि "भई ये तुम्हारे गुरू का चक्कर ठीक नहीं है। हमारे यहाँ वहाँ से लोग आए थे, उनका ऐसा-ऐसा हाल हुआ।" धीरे-धीरे इस बात को कहना चाहिए क्योंकि लोगों को पसन्द नहीं आता। गुरू की छाप बड़ी गहरी होती है और इसलिए आपको इसमें बहुत समझकर रहना चाहिए।

बहरहाल आप 'अपने' बारे में जब बात सोचते हैं, तो ये समझें कि "मेरा गुरू मैं ही हूँ" माने उस गुरू को मुझे जागृत कर लेना है और उसी से सब कुछ जानना है। जब ये जागृत हो जाता है तो मुझे कुछ नहीं कहना पड़ता। आप खुद ही जानते हैं कि कौन गुरू सही हैं, कौन गुरू सही नहीं है। आप तो उनसे भागा करेंगे। आपने देखा ऐसे गुरू के शिष्य आए, तो उन शिष्यों से भी भागे। लेकिन पहले उतनी sensitivity (संवेदना)

आनी चाहिए। उतनी संवेदन शक्ति आनी चाहिए जिससे आप समझ सकें क्या बात है ?

क्योंकि हम लोग इस gross, बिलकुल, जड़ जिसमें रहते हैं, उससे अति-सूक्ष्म में उतरना है। और जड़ हमें बार बार खींचता रहता है। जड़ जो है 'हमेशा' आत्मा को दबाता है। देखिये, अब आप जैसे कुर्सी पर बैठे हैं। इसलिए कुर्सी को छोड़कर आप नीचे नहीं बैठ सकते। जड़ जो है हमेशा शरीर को दबाता है और शरीर के माध्यम से अपनी आत्मा को दबाता है। इसलिए जड़ के ऊपर में इतना हमारा चित्त अगर रहता है, इसको हटा करके हमको अपने सूक्ष्म में लाना है।

और सूक्ष्म में लाने के लिए बहुत सारी बाधाएं हैं। उसमें से सबसे बड़ी बाधा तो ये, जिससे एकादश पकड़ जाते हैं, दुनिया-भर की बीमारियां हो जाती हैं, कैंसर की बीमारियां हो जाती हैं, और बहुत कठिन चीजें हो जाती हैं। तो अब आपको संभल जाना चाहिए कि हमें अब जब मां जा रही हैं, तो हम अपने को वृक्ष की तरह तैयार कर लें। हमें एक वृक्ष बनना है। जब मां आएंगी, तो देखेंगी कि वृक्ष है। और दूसरी बात ये है कि उसको करने के लिए मां ने सीधे सरल जो उपाय बताए हैं अब बहुत से लोग कहते हैं, "मां, हमें time (समय) नहीं मिलता, ये नहीं...।" जब आप उसे शुरू कर देंगे, तब आपको इसीको (time) समय मिलेगा और किसी चीज को नहीं। क्योंकि इसमें शांति है, आनन्द है, इसमें सारे सुखों का जो है 'पूरा' स्वाद है। इसलिए धीरे-धीरे इसमें आपको बढ़ना पड़ता है। जब इसका आपको चस्का लग जाएगा तब मुझे कहना पड़ेगा कि अब कुछ कम करो। इस तरह की बात है। इसलिए धीरे-धीरे इसमें मजा उठाना चाहिए और इसमें बढ़ना चाहिए।

अब जो दूसरी बात, जिसकी बहुत ही मां ने आपको कही है, वो है collectivity (सामूहिकता), माने ये कि हमारे अन्दर ये समझ नहीं आती कि आप सब 'एक ही विराट के अंश हैं।' जैसे ये उंगली मेरे हाथ का एक अंश है, । उसी प्रकार आप उस विराट के अंग-प्रत्यंग हैं। और आप जागृत हो गए हैं। अब आपके अन्दर अगर collectivity न आए इसका मतलब है आप अधूरे जागृत हैं। अगर मेरी उंगली सुन्न हो जाए समझ लीजिए, तो इसको पता ही नहीं चलेगा कि बाकी जने क्या हुए ? है न बात ? अगर आप अभी भी सुन्न दशा में होंगे, तो आपको पता नहीं चलेगा कि और जगह क्या है ?

तो collectivity के विरोध में बहुत लोग जाते हैं। क्योंकि हमारी आदत क्या है ? पहले group (दल) बना लिए, इसके बना लिए, उसके बना लिए। ये हम सब लोगों की आदत है। फिर हम लोग jealousy (ईर्ष्या), सहजयोग में भी, आश्चर्य की बात है ! Jealousy (ईर्ष्या) सहजयोग में कैसे हो सकती है ? हो ही नहीं सकती। किसी को ये भी jealousy होती है कि मां मेरे घर आई, उनके घर नहीं आई।

मैं तो निर्मम आदमी हूं, मैं तो कहीं चिपकती ही नहीं। मेरा चिपकना बनता ही नहीं। तो जो ऐसा इंसान है जो चिपकता ही नहीं है, उसके लिए क्या jealousy (ईर्ष्या) करनी ? ये भी बेवकूफी की बात है। अगर कमल के दल पर आप पानी छोड़िये, तो उस पर चिपकता ही नहीं है। अगर एक कमल के दल पर पानी चमक रहा है, और वो कमल का दल ये सोचे कि मैं बड़ा ऊंचा, और बाकी सोचें कि इसके यहां पानी चमक रहा है और मेरे यहां नहीं; तो धीरे से पानी लुढ़क जाएगा। क्योंकि पानी उस पर चिपकता नहीं है। इसलिए इस तरह की बातें कभी करना नहीं, बड़ी क्षुद्र बातें हैं। ऐसी क्षुद्र बात में नहीं पड़ना चाहिए।

आप सब हमारी आंखों के तारे हैं और सबका हमको बड़ा ध्यान है। विचार 'छोटा-छोटा' रहता

है। ये आप खुद जानते हैं कि छोटी-छोटी बातों में आपका ख्याल रखते हैं। लेकिन आपको भी एक-दूसरे का पूरा ख्याल रखना चाहिए।

बात करते वक्त बहुत ज्यादा नाराजी से, गुस्से से, argumentative (बहस का) तरीका नहीं होना चाहिए। कभी एक-दूसरे से डांट करके या उलट करके बात नहीं करनी चाहिए। बहुत शांतिपूर्वक, प्रेमपूर्वक, सबको समझा करके, आराम, से बात करनी चाहिए, जहां तक हो सके अपने अन्दर माधुर्य लायें। इसको practice (अभ्यास) करनी चाहिए। अगर आपके यहाँ माता-पिता ने नहीं सिखाया है तो आपको अब सीखना पड़ेगा। किस तरह से हम सुमधुर हों। हमारी आवाज भी जो है, ऐसी नहीं होनी चाहिए कि जिसको सुनते ही सात आठ आदमी भाग खड़े हों कि "ये कौन कर्कश आ गया?" इसलिए आवाज में भी मिठास होनी चाहिए। उसमें एक माधुर्य होना चाहिए। उसमें एक मोहित करने की शक्ति होनी चाहिए। जिससे मनुष्य को लगे कि ये जो बोल रहे हैं, इसमें खिचाव है। इसका भी हमें अभ्यास करना चाहिए। हमारे व्यवहार का, हमारे तौर-तरीकों का, सबमें एक सुचारू रूप से जब हम बन जाएंगे और जब दुनिया आप सहजयोगियों को देखेगी तो कहेगी, "भई वाह, वाकई ये तो·····!"

हालांकि आपके अन्दर दीप तो जल गया, लेकिन बाहर का अगर कंडील साफ नहीं है तो वो दीप कैसे लगे। बाह्य का भी कंडील साफ करना चाहिए। और बाह्य का कंडील साफ करने के वक्त में ये ध्यान रखिए कि आप में अगर ऐसा दिखाई दे कि आप में बड़े ही पैसे का लालच है या आप बहुत ही पैसों की बातें करते हैं, या आप बहुत ही ज्यादा किसी दूसरी चीज की बातें करते हैं, तो लोग कहेंगे कि "साहब ये सहजयोगी हैं?" ये सहजयोगी नहीं है, क्योंकि जो योग में रहता है वो योगी है। और फिर किसी से आप को लगाव ही नहीं है। इसलिए अपनी बातचीत में, अपने व्यवहार में, सब चीज में, आप में एक सुचारू रूप आना चाहिए, और आपकी जो कुछ भी वृत्ति है इसमें बड़ा दानी होना चाहिए। ये नहीं कि आप कंजूसी कर रहे हैं।

इस प्रकार एक दूसरे का पूरा ख्याल रखना, एक दूसरे की मदद करना, एक दूसरे से प्रेम से रहना और सब चीज में एक पूरा living organism (जीवन्त संरचना) है; माने ये कि जो इस हाथ को दुख होगा, वो दूसरे हाथ को भी होना चाहिए। यहां पर जो दुख होगा, वो यहाँ पर होना चाहिए। ये सबको लगना चाहिए कि ये एक living organism (जीवन्त संरचना) है।

धीरे-धीरे, मुझे पूरा विश्वास है, सब कुछ ठीक हो जाएगा। और धीरे-धीरे collectivity (सामूहिकता) का कितना मजा आएगा!

और कोई आपका प्रश्न हो तो पूछिए।

प्रश्न : श्री माताजी, चित्त को आत्मा में कैसे रखें?

श्री माताजी : इसके अनेक तरीके हैं। अपने यहाँ जैसे मंत्र से बताया गया है। अपने right hand (दायें हाथ) को हृदय पर रखें और left hand (बायें हाथ) को आप मेरी ओर रखें। और बार-बार कहें—बारह मर्तबा कम से कम कि—माँ, मैं आत्मा हूँ।

Left (बांये) से right (दांये) में अगर आप डालें, सात मर्तबा, तो आपका हृदय जो है, वो जागृत हो जाता है। और उसके बाद आप शिवजी का मंत्र अगर कहें, आपके हृदय में बसा हुआ शिव का जो centre (चक्र) है, वो जागृत हो जाएगा।

दूसरी बात ये है कि सहस्रार का जो ये ब्रह्म-रन्ध्र है, यही आपका सदाशिव का स्थान है।

इसलिए ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान अगर रखें, तब भी आपका जो कि चित, ब्रह्मरन्ध्र, सदाशिव का स्थान है, आत्मा में रहेगा। बार-बार अपने चित्त को हृदय पर अगर ले जाएं तो भी आपका चित्त आत्मा में रहेगा। इस प्रकार आप ध्यान रखकर कीजिए।

और भी इसके अलावा बहुत से महात्म्य हैं जिसके द्वारा आप अपनी आत्मा चित्त में लाते हुए प्रभु से कहें, माने कि प्रार्थना, प्रार्थना करें कि "माँ, हमें आत्मा बना दो।" "माँ हमारा जो चित्त है वो आत्मा में रहे।" प्रार्थना बहुत बड़ी चीज है सहजयोगियों के लिए, क्योंकि जब आपका योग घटित होता है, आप परमात्मा के साम्राज्य में आ गये हैं, आपकी प्रार्थना। मैं अभी तक ये ही जानती हूँ, कि "माँ मुझे नौकरी दे दो।" "माँ, हमें promotion (तरक्की) दे दो।" "मां, मेरी लड़की को ठीक कर दो।" इस प्रकार की प्रार्थना करते हैं। "मेरी शादी कर दो" नहीं तो "मेरी शादी तोड़ो" दोनों।

लेकिन ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि "माँ, मुझे आत्मानन्द दो," "मुझे निरानन्द दो।" इस तरह की जब प्रार्थना की जाती है, तब आपका चित्त धीरे-धीरे अन्दर बढ़ता जाता है। क्योंकि आप पार हैं, आपके लिए हरेक शब्द मंत्र है। आपकी प्रत्येक प्रार्थना में, जो भी आप कहते हैं, उसकी पूर्ति होती है। लेकिन आप मांगते क्या हैं, इस पर है न। आप जैसा चाहते हैं, वो ही मांगते हैं, लेकिन परमात्मा को मांगने वाले लोग हैं, वो परमात्मा के बारे में मांगेंगे।

अधिकतर लोग तो कहते हैं, "माँ आपकी कृपा से ये हो गया, आपकी कृपा से मुझे नौकरी मिल गई।" लेकिन जो लोग ये सोचते हैं कि "आपकी कृपा से मुझे आत्मा मिल गई।" वो ही आगे बढ़ गए हैं, वो ही कहना चाहिए कि परिपक्व हो गए। और जो आदमी ये ही कहता रहेगा कि "आपकी कृपा से ये हो गया, आप की कृपा से·····।" ये तो सारी सांसारिक चीज़ें हैं, ये होती हैं, हमारी कृपा ही से तो होती हैं। उसमें कौन-सी विशेष बात है। वो तो क्षेम है। लेकिन 'योग' पूरा होना चाहिए। तभी आपका आत्मा में चित्त रह सकता है, आत्मा से पूर्णतया योग होता है।

प्रचार कार्य

माता आली भारताला सहजयोगाच्या प्रचाराला ॥धृ॥
अनवाणी पायपिटी किती केली आटाआटी।
सहजयोग प्रचारासाठी सोडीली त्यांनी नातीगोती।
अमेरीका दौरा त्यांनी पूर्णपणे यशस्वी केला।
परी श्रेय त्यांनी दिले सहजयोग प्रार्थनेला ॥१॥

पुणा, सांगली कोल्हापुर, अहमदनगर, राहूरी।
सोलापुर, धुळे केले आतां राहिली जेजुरी।
माता चालली जेजुरीला आगामी सालाला।
भणी मल्ल शरण जातो भिऊनी मातेच्या परशुला ॥२॥

सौ० शकुंतला निकोलस
अंधेरी केन्द्र

बम्बई

सहजयोग और श्री कल्की शक्ति

आज श्री कल्की देवता व कुण्डलिनी शक्ति इनका क्या संबंध है, ये कहने का प्रयास किया है। 'कल्की' शब्द निष्कलंक शब्द से निर्मित हुआ है। निष्कलंक—माने जिस पर कलंक या दाग नहीं हो। ऐसा मतलब अत्यन्त शुद्ध एवं निर्मल है।

श्री कल्की पुराण में श्री कल्की अवतरण के बारे में बहुत कुछ लिखा है। उसमें ये कहा है कि श्री कल्की का अवतरण इस भूतल पर संभालपुर गाँव में एक सफेद घोड़े पर होगा। 'संभाल' शब्द का मतलब भाल माने 'कपाल' और संभाल माने भाल प्रदेश पर स्थित अर्थात् श्री कलकी देवता का स्थान हमारे कपाल पर है। इस शक्ति को श्री महाविष्णु की हननशक्ति भी कहते हैं।

श्री येशु का अवतरण व श्री कल्की शक्ति का अवतरण इस बीच के कालावधि में मनुष्य को अपने स्वयं का परिवर्तन करके परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मौका है। इसी को बाइबल में 'आखिरी न्याय' या the last judgement कहा है। इस भूतल के हर एक मनुष्य का ये आखिरी न्याय होने वाला है। कौन परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए ठीक है और कौन नहीं, इसकी छंटनी होने का समय अब आया है।

सहजयोग से सभी का आखिरी न्याय होने वाला है। हो सकता है बहुत से लोगों को ये बात अद्‌भुत लगेगी परन्तु ये अद्वितीय होकर भी सत्य है। मां के प्यार से कोई व्यक्ति सहज में पार (आत्म-साक्षात्कारी) होता है और इसलिए ऊपर कही गई 'आखिरी न्याय' की बात इतनी सुन्दर, नाजुक व सूक्ष्म बनायी गई है, उसमें किसी को भी विचलित नहीं होना है। मैं आपको कहना चाहती हूँ कि सहजयोग से ही आपका आखरी न्याय होने वाला है। आप परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लायक हैं कि नहीं इसका निर्णय सहजयोग द्वारा ही होने वाला है।

बहुत से लोग अलग अलग कारणों से सहजयोग की तरफ़ बढ़ते हैं। समाज में कई लोग बहुत ही साहसी वृत्ति के, जड़ वृत्ति के, या सुस्त होते हैं। ये लोग इड़ा नाड़ी पर कार्यान्वित होते हैं। इसमें कुछ लोग मदिरापान अथवा इसी तरह का कुछ पीते हैं व इससे ऐसे लोग 'सत्य' से दूर भागते हैं। दूसरे तरह के कुछ लोग पिंगला नाड़ी पर कार्यान्वित होते हैं और बहुत ही महत्वाकांक्षी होते हैं, स्वतंत्रता चाहते हैं और उनकी अपेक्षाएं इतनी विशेष होती हैं कि उससे उनकी दूसरी side (इड़ा-नाड़ी) संपूर्णतः खराब हो जाती है, उससे उनको अनेक दुष्कर रोग हो जाते हैं। उनको परमेश्वर से संबन्धित रहना अच्छा नहीं लगता। इस तरह दोनों प्रकार के लोग आपको समाज में मिलेंगे। लोग एक तो बहुत ही तामसी वृत्ति में रहेंगे, नहीं तो बहुत ही राजसी वृत्ति में। इसमें तामसी वृत्ति के लोग शराब तो शराब ही पिएंगे मतलब स्वयं को जागृत स्थिति से, सच्चाई से परे हटकर रखेंगे। दूसरे प्रकार के लोग जो कुछ सच्चाई है, सुन्दर है उसे नकारते रहते हैं। ऐसे लोग अहंकार से भरे हुए होते हैं। उसी प्रकार प्रतिअहंकार से भरे हुए

सुस्त, जड़ व लड़ाकू प्रवृत्ति के लोग दिखाई देते हैं। जो लोग बहुत ही महत्वाकांक्षी होते हैं, वे आपस की होड़ में स्वयं को मजाक बना लेते हैं। ऊपर कहे गये दोनों तरह के लोग, एक तो बहुत महत्वाकांक्षी, माने अहंकार से भरे हुए व दूसरे प्रति अहंकार से भरे हुए सहजयोग में बड़ी कठिनाई से आ सकते हैं। परन्तु जो लोग सात्विक वृत्ति के हैं या मध्यम वृत्ति के हैं ऐसे लोग सहजयोग में जल्दी आ सकते हैं। इसी तरह जो लोग बहुत ही सीधे हैं वे भी सहजयोग को बिना मेहनत के प्राप्त होते हैं। वे पार भी सहज में होते हैं। आपने देखा होगा कि सहजयोग के लिए शहर के कुछ गिने-चुने लोग आएंगे, परन्तु वहीं गाँवों में हम जाते हैं तो पाँच से छः हज़ार लोग आते हैं। और विशेषता ये है कि सभी के सभी लोगों को आत्म-साक्षात्कार की अनुभूति प्राप्त होती है। इसका कारण शहरी मनुष्य जरूरत से ज्यादा ही कार्यमग्न होता है। उन्हें लगता है, परमेश्वर की खोज करने के सिवाय और काम महत्वपूर्ण है। परमेश्वर की खोज के लिए शहरी लोगों को समय नहीं है। उन्हें लगता है ये बातें फ़िज़ूल की हैं, इसलिए अपना समय क्यों नष्ट करें ? इस संदर्भ में मुझे ये बात कहना जरूरी है कि सहजयोग ही आपको सही रास्ते पर ले जा सकता है व परमेश्वरी ज्ञान मूलतः खोलकर बता सकता है। सारे परमेश्वर के खोजने वालों को सहज ही परमेश्वरी ज्ञान खुलकर बताया जा रहा है। ये सारा सहज में होता है। आपको अपना आत्म-साक्षात्कार बिना कष्ट उठाये मिलता है। इसलिए आपको कुछ भी देने की जरूरत नहीं है और कोई भी कष्टप्रद आसन भी करने की जरूरत नहीं है।

परन्तु एक बात पक्की ध्यान में रखनी चाहिए। आत्म-साक्षात्कार के बाद परमेश्वर के राज्य में प्रस्थापित होने तक बहुत बाधाएं हैं, और श्री कल्की शक्ति का संबंध इसी से संलग्न है। आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होने के बाद भी जो लोग अपनी पुरानी आदतों और प्रवृत्तियों में मग्न होते हैं, उनकी स्थिति को 'योगभ्रष्ट' स्थिति कहते हैं। उदाहरण—कोई व्यक्ति पार होने के बाद भी अहंकार वृत्ति में फंसा है या पैसे कमाने में ही मग्न है, या अपनी तानाशाही प्रस्थापित करने में अति मग्न है, तो वह व्यक्ति कोई ग्रुप बना सकता है और ऐसे ग्रुप पर वह व्यक्ति अपना बड़प्पन स्थापित कर सकता है। परन्तु इसमें थोड़े दिनों बाद ऐसा मालूम होगा कि वह व्यक्ति परमेश्वर से, सच्चाई से, वंचित हो गया, और अन्त में उसका सर्वनाश हो गया। उसके बाद उस व्यक्ति से सम्बन्धित लोग भी सच्चाई से, यानी परमेश्वर से दूर हो जाते हैं और उनका भी सर्वनाश हो सकता है। ऐसा सहजयोग में आकर भी घटित हो सकता है। इस बंबई में ऐसी अनेक घटनाएं बार-बार हुई हैं। इसे 'योगभ्रष्ट' कहना चाहिए। इसमें कोई व्यक्ति अपने योग से च्युत होता है क्योंकि सहजयोग में मनुष्य को संपूर्ण स्वतन्त्रता होती है। किसी व्यक्ति की योग में बढ़ोत्तरी या अधोगति यह उस व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर अवलंबित है। कुछ सच्चे व महान गुरुओं के पास अलग तरह की योग-साधना सिखाई जाती है। उससे साधक का अंतःशुद्धिकरण होता है और जीवन बचपन से शिष्टबद्ध बनाया जाता है। इससे उस साधक का जीवन कष्टप्रद बनाया जाता है। और उस साधक में शारीरिक एवं व्यक्तित्व निर्माण किया जाता है। उसका स्वभाव व उसका पूरा व्यक्तित्व ही बदल दिया जाता है। लेकिन सहजयोग में सभी बातें आपकी स्वतंत्रता पर निर्भर होती हैं। ये सारी बातें समझने के लिए आपको हमेशा उस परमेश्वरी शक्ति के साथ सामूहिक चेतना में जुड़ा हुआ रहना अत्यंत आवश्यक है।

हर-एक चीज का इस संसार में बिलकुल सही ढंग से नियमन रहता है। उसी प्रकार सहजयोग में भी है। सहजयोग में आकर आप दिखावा नहीं कर सकते। किसी विशेष बात के लिए ग्रुपबाजी नहीं

कर सकते। सहजयोग में आने के बाद इस प्रकार के लोगों का बहुत जल्दी भंडा फूटता है। क्योंकि ऐसे कृत्य करने वाले लोगों के सारे चक्रों पर जोरों की पकड़ आती है और उसकी जानकारी उन व्यक्तियों को नहीं रहती है। ज्यादा से ज्यादा उन्हें चैतन्य लहरियों की संवेदना रह सकती है, परन्तु थोड़े समय में ही ऐसे लोगों का नाश होता है।

इस प्रकार की 'योगभ्रष्ट' स्थिति किसी सहजयोगी को आना बड़ी बुरी घटना है। एक तो योग घटित होना यही बड़ा कठिन काम है। उसमें भी योग घटित होने के बाद अगर इस प्रकार की 'योगभ्रष्ट' स्थिति पैदा हो रही है, तो वह व्यक्ति श्री कृष्णजी के अनुसार राक्षस योनि में जाता है।

जो लोग सहजयोग में आते हैं उन्हें इसमें जमकर टिकना पड़ेगा, नहीं तो वे योग को प्राप्त न होकर किसी न किसी योनि में जा गिरेंगे। उसके बाद कदाचित् उन लोगों का फिर से मनुष्य जन्म हो सकता है, परन्तु उन लोगों का ये पूरा जीवन व्यर्थ हो गया। श्री कल्की देवता की शक्ति सहजयोगियों के साथ गुरुता से प्रत्येक क्षण कार्यान्वित रहती है। श्री कल्की देवता सहजयोगी की पवित्रता की रक्षा स्वयं के एकादश शक्ति के साथ करते हैं। जो कोई सहजयोग के विरोध में काम करेगा उन सभी को बहुत परेशानी होगी। इतिहास को देखा जाए तो लोगो ने अनेक संत पुरुषों को बहुत परेशान किया। परन्तु अब आप संतों को, साधु लोगों को परेशान नहीं कर सकते, क्योंकि श्री कल्की देवता की शक्ति पूर्णरूप से कार्यान्वित है। जो मनुष्य सीधा-सादा है, संत है, उसे परेशान किया तो कल्की शक्ति आपको कहीं का नहीं रखेगी और उस समय आपको भागने के लिए ये पृथ्वी भी कम पड़ेगी।

ऊपर दी गई बातें केवल सहजयोगियों को ही नहीं, अपितु दुनिया के सारे लोगों के लिए है और इसलिए आप सभी को सावधानी से रहना पड़ेगा। औरों को मत सताओ, उनकी अच्छाइयों का फायदा मत उठाओ, और अपना रुतबा, बड़प्पन जताकर व्यर्थ बातें मत बनाओ। क्योंकि कल्की देवता ने आप के जीवन में संहार कार्य की शुरूवात की तो आप 'क्या करें और क्या न करें' की स्थिति आ सकती है।

इसी प्रकार जब आप अज्ञानता से या अनजाने में किसी दुष्ट व्यक्ति को भजते हैं या उसके संपर्क में होते हैं, तब आपको भी इससे परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसे समय किसी निष्पापी (मासूम) मनुष्य को भी तकलीफ़ होती है। तो किसी गैर व्यक्ति के कारण आप पागल मत बनिए। अगर ऐसा किया तो उसकी कीमत आपको चुकानी पड़ेगी।

जिस समय आप किसी गैर व्यक्ति के कारण प्रभावित होते हैं उस समय आप कहीं पर एडजस्टमैन्ट (मन को समझाना) करते हैं। फिर आप सोचते हैं कि, उसमें क्या हुआ? फलाने-ढिकाने हमारे पुरखों के समय से पंडित हैं, तो उन्हें कुछ देना ठीक रहेगा। आप जरा सोचिए कि, पवित्र प्यार की गंगा माई एक जगह से बहती है और उन्हीं के किनारों पर बैठकर परमेश्वर के नाम पर आपसे कोई पैसे निकालता है। कितना पागलपन और अधोरीपन है? उसमें आपको लगता है कि हमने उन पुजारियों को पैसे देकर कितना पुण्य कमाया है?

इस तरह सत्य क्या है, ये न समझकर हम अंधविश्वास से जिन्दगी जीते हैं। ये भारत में ही नहीं, इस दुनिया में सभी जगह देखने को मिलता है। कितनी बातें हम आँखों से देखते हैं, फिर भी मंदिरों में जाकर अंधविश्वास से अनेक बातें करते हैं। परमेश्वर के नाम पर एक के पीछे एक ऐसे अनेक पाप हम करते रहते हैं। पाप क्षालन (धोना) करने के बदले पापों में वृद्धि करते हैं। ऐसे लोगों को मैं 'तामसी' कहती हूँ। ऐसे लोग अपना दिमाग जरा

भी नहीं लगाते। इसलिए उन्हें 'मूढ़ बुद्धि के' कहना चाहिए। ऐसे लोग किसी भी व्यक्ति की ओर आकर्षित होते हैं। वह कोई भी चमत्कार की घटनाएँ सुनने के बाद तुरन्त उस पर विश्वास करते हैं। चमत्कार करने वालों ने परदेश में जाकर बहुत से लोगों से पैसे निकाले हैं। उस पैसों के बदले में उन्हें पक्षाघात या पागलपन इस तरह की बीमारियाँ भी साथ दे दीं। इतना सभी होकर भी कितने लोग ऐसे चमत्कार करने वालों के पीछे पागलों की तरह भागते हैं और अपने पापों में वृद्धि करवाते हैं।

आपके पास जो कुछ समय मिला है, वह सब आपातकाल (emergency) की तरह और महत्वपूर्ण है। और इसीलिए आपको स्वयं आत्म-साक्षात्कार के लिए सावधान रहना चाहिए। इसमें किसी को भी दूसरों पर निर्भर नहीं रहना है। अपने आप स्वयं साधना करके परमेश्वर के हृदय में ऊँचा स्थान प्राप्त करना चाहिए, अर्थात इसके लिए सहजयोग में आकर स्वयं पार होना जरूरी है, क्योंकि पार होने के बाद ही साधना करनी है।

जिस समय कल्की शक्ति का अवतरण होगा, उस समय जिन लोगों के हृदय में परमेश्वर के प्रति अनुकम्पा (श्रद्धा) व प्रेम नहीं होगा या जिन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं चाहिए होगा, ऐसे सभी लोगों का हनन (नाश) होगा। उस समय श्री कल्की किसी पर भी दया नहीं करेंगे। वे ग्यारह रुद्र शक्ति से सिद्ध हैं। उनके पास ग्यारह अति बलशाली विनाश शक्तियाँ हैं। इसलिए व्यर्थ की बातों में अपना समय नष्ट मत करिए। चमत्कार दिखाने वाले अगुरूओं के पीछे 'भगवान भगवान' करके मत दौड़िए। जो सही है उसी को अपनाइए। नहीं तो श्री कल्की शक्ति का अपनी सारी शक्तिओं के साथ संहार करने के लिए अवतार लेकर आने का समय बहुत नजदीक आया है।

कुछ दूसरे तरह के लोग होते हैं। वे हमेशा अपनी चालाकी और बुद्धिमानी पर विचार करते हैं। उन्होंने हमेशा परमेश्वर को नकारा है। ऐसे लोग कहते हैं "परमेश्वर कहाँ है?" परमेश्वर वगैरा कुछ भी नहीं है, ये सब कुछ fraud (धोखा) है। Science (विज्ञान) यही सब कुछ है। मैं कहती हूँ आज तक साइन्स से क्या हुआ। आपने देखा तो दिमाग में आएगा। साइन्स ने अभी तक बेजान चित्रों के सिवाय कुछ नहीं बनाया। विज्ञान की वजह से आप केवल अहंकारी बने हैं। पश्चिमी देशों में हर-एक मनुष्य अहंकारी है। पाप वृद्धि कैसे करनी है, उसके संबंध में वे अनेक जानकारियां खोज निकालते हैं। गन्दे से गन्दा पाप कैसे करना है, इसी में वे व्यस्त हैं। उसी में भारत से कुछ लोग जो अपने आप को बहुत बड़े अगुरू समझते हैं और कहलवाते हैं, वे गये हैं। वे उन्हें ऐसे पाप वृद्धि में मदद करते हैं। उससे ये सब लोग जल्दी ही नरक में जाने वाले हैं। जो कुछ गलत है वह गलत ही है। जो कुछ हमारे धर्म के विरोध में है वह सब गलत है। फिर वह कल हो या आज हो या १००० साल पहले हो, कभी भी हो वह गलत ही है।

आजकल एक नयी बात देखने को मिलती है "उससे क्या हुआ? क्या गलत बात है?" इस तरह के सारे प्रश्नों के उत्तर कल्की शक्ति देगी। मैं केवल फिर से एक बार आपको इशारा दे रही हूँ कि गलत मार्ग का अवलंबन मत करिए। जो आपके उत्क्रान्ति के विरोध में है वह मत करिए। ऐसा करोगे तो एक समय ऐसा आएगा जब आप के पास किये हुए कृत्यों का पछतावा करने के लिए भी समय नहीं रहेगा। उस समय उसमें क्या हुआ? इसमें क्या हुआ? ऐसे सवाल पूछने का भी समय नहीं रहेगा एक क्षण में श्री कल्की आपका संहार करेगी। ऐसा कहते हैं कि उस समय सारा काम प्रचंड होगा। हर एक व्यक्ति अलग अलग छाँटा जाएगा। उस समय कोई भी कुछ नहीं कह सकेगा। देखिए सब का विज्ञापन है। सब कुछ

छपा हुआ है।

एक माइक्रोफोन जो विज्ञान के कारण बनाया गया है वह भी सहजयोग के प्रचार कार्य के लिए इस्तेमाल होता है। अगर मैंने माइक्रोफोन अपने चक्रों पर रखा तो उस माइक्रोफोन में से भी चैतन्य लहरियाँ बहती हैं। उसका प्रत्यक्ष अनुभव लोगों ने किया है और कर सकते हैं। उन चैतन्य-लहरियों से आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। पूरा विज्ञान सहजयोग के काम आने वाला है। कुछ दिन पहले दूरदर्शन के कुछ लोग मेरे पास आये। कहने लगे, "माताजी दूरदर्शन पर हमें आपका कार्यक्रम रखना है।" उस समय मैंने उन लोगों से कहा, 'कोई भी कार्यक्रम रखने से पहले आप संभल के रहिए। मुझे विज्ञापन की जरूरत नहीं है। जो कुछ भी करोगे सही ढंग से करिए।' दूरदर्शन के माध्यम से सहजयोग फैल सकता है। जिस समय दूरदर्शन पर मेरा कार्यक्रम होगा उस समय लोग अपने टी. वी. सैट के सामने हाथ फैलाकर बैठेंगे तो बहुत से लोगों को आत्म-साक्षात्कार की अनुभूति मिल सकती है। ये वास्तविकता है। मेरे इस शरीर से चैतन्य लहरियां बहती है, ये वास्तविकता है। इसके कारण किसी को भी क्रोधित होने का कारण नहीं। अगर मैं इस तरह की बनायी गयी हूँ तो इसमें आपको बुरा मानने का नहीं।

दूसरा प्रकार अहंकारी और महत्वाकांक्षी लोगों के साथ दिखायी देता है। किसी के पास बहुत धन-संपत्ति है ऐसे मनुष्य के पास जाकर पूछिए क्या वह सुखी और खुश है? उसके जीवन को जरा गौर से देखिए। जो अपने आपको कामयाब कहलवाते हैं उनके पास जाकर देखिए उन्होंने कौन-सी कामयाबी हासिल की है? उन्हें कितने लोग सम्मान देते हैं? उनकी पीठ फिरते ही लोग कहते हैं, 'हे भगवान इनसे छुटकारा दिलवा दो।' आप मंगलकारी हो क्या? आपके दर्शन से औरों को सुख होता है क्या? आप मंगलमय हो क्या। यह देखिए। आपका व्यक्तित्व किस तरह का है स्वयं का निर्णय स्वयं करना है। ये सब सहजयोग में ही घटित हो सकता है।

आप गलत रास्ते से गये तो आप में से बहुत गन्दी-लहरियाँ (bad vibrations) आएंगी। अनजाने में आप अनेक पाप करते रहोगे और फिर भी मुझसे कहते रहोगे 'माताजी मैं बहुत अच्छा हूँ, मुझे चैतन्य लहरें आ रही हैं" ऐसे लोग अपने आपको और दूसरों को ठगते हैं। आपका निर्णय कौन करेगा? आपका ही कर्म। आपने दूसरों पर कितने उपकार किये?

किसी मोहिनी विद्या वाले (अविद्या या काली विद्या) आदमी पर भरोसा करके आप अपने घर के सदस्यों का नाश करना चाहते हैं क्या? कम से कम घर के और सदस्यों के लिए सोचिए। समाज में अनेक तरह के गलत लोग हैं ऐसे लोगों से पूर्णतया दूर होना, सहजयोग में आकर सहज हो सकता है। लंदन में भी ऐसे गन्दे लोगों को लुभाने वाले अनेक लोग हैं, मुझे मालूम है। मैंने उन्हें बहुत बार बताया है कि आप ये गलत रास्ता छोड़ दीजिए। आपको तुरन्त समझना चाहिए कि माँ ये सारी बातें समझती हैं। अगर आपकी माँ ने कोई बात आपसे कही तो वह माननी चाहिए। इसमें वाद-विवाद नहीं करना चाहिए। क्या आप को वाद-विवाद से चैतन्य लहरें प्राप्त होने वाली हैं? ऐसा सोचए जरा। फिर भी आप सहजयोग में आकर गलतियाँ करते हैं। लेकिन ये बहुत गलत और बुरी बात है, ये समझ लीजिए, क्योंकि ऐसे योग-भ्रष्ट लोगों को मुक्ति नहीं मिलेगी।

मुझे सारे सहजयोगियों को भी इशारा देना है क्योंकि सहजयोग ही आखिरी न्याय है। आप परमेश्वर के राज्य के लिए सही हैं या नहीं, इसकी जाँच-पड़ताल ही सहजयोग है। आप सहजयोग में आकर पार होकर परमेश्वर के राज्य के नागरिक बन सकते हैं। उसके पहले आपको परमेश्वरी प्रेम

व परमेश्वरी ज्ञान समझने की पात्रता भी नहीं होती है। समझ लीजिए आप भारतीय गणराज्य के नागरिक हैं और आपने कोई गुनाह किया, तो आप सजा के पात्र हैं। उसी प्रकार परमेश्वर के राज्य के बारे में भी है और इसलिए परमेश्वरी राज्य की नागरिकता मिलने के बाद आप सभी को बहुत ही सावधानी बर्तनी पड़ेगी।

दूसरी बात मुझे आपसे कहनी है। वह है श्री कल्की देवता की विनाश-शक्ति के बारे में। श्री कल्की अवतरण बहुत ही कठोर है। पहले श्री कृष्ण जी का अवतरण हुआ। उनके पास हनन शक्ति थी। उन्होंने कंस और राक्षसों को मारा। बहुत छोटे-से थे वे तभी उन्होंने पूतना राक्षसनी को कैसे मारा, ये आपको मालूम है। परन्तु श्री कृष्ण 'लीला' भी करते थे। वे करुणामय थे। उन्होंने लोगों को बहुत बार छोड़ दिया, क्षमा किया। श्रीकृष्ण क्षमाशक्ति से परिपूर्ण थे। क्षमा करना श्री कृष्णस्थित गुणधर्म है। परन्तु उस परमेश्वर की करुणा समझने के लिए अगर हम असमर्थ साबित हुए तो इस कल्की शक्ति का विस्फोट होगा और पूरी क्षमाशीलता आप पर संकटों की तरह आएगी। श्री कृष्ण ने स्पष्ट कहा है कि किसी समय मेरे विरोध में कुछ चला लेंगे। लेकिन आदिशक्ति के विरोध में एक भी शब्द नहीं चलेगा। ऊपर निर्दिष्ट किया हुआ एक बहुत बड़ा अवतरण होने वाला है, ये पक्की बात है। ऐसे अवतारी व्यक्ति के पास श्री कृष्ण की सारी शक्तियाँ, जो केवल हनन (सर्वनाश) शक्ति श्री शिव की हननशक्ति अर्थात् ताण्डव का एक हिस्सा ऐसे सर्व-प्रकार की हनन शक्तियाँ होंगी। उस अवतारी पुरुष के पास श्री भैरव का खड्ग होगा, श्री गणेश का परश होगा, श्री हनुमान की गदा और विनाश की सिद्धियां होंगी। श्री बुद्ध की क्षमाशीलता व श्री महावीर की अहिंसा शक्ति भी उलटकर गिरेगी, ऐसी ग्यारह शक्तियुक्त श्री कल्की देवता का अवतरण होने वाला है। उस समय सर्वत्र हाहाकार मचेगा और उसी समय सबका चयन होने वाला है। उस समय सहजयोग भी किसी को नहीं बचा सकता क्योंकि उस समय सहजयोग भी समाप्त हुआ होगा। आप सहजयोग से भी अलग किये जाओगे और प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर को सही लगने वाला निकाला जाएगा। बाकी के लोगों को मारा जाएगा और ये हनन ऐसा वैसा न होकर संपूर्ण जड़ का ही नाश होगा। पहले देवी के अनेक अवतारों ने अनेक राक्षसों का नाश किया, पर राक्षसों ने फिर से जन्म लिया। परन्तु अब संपूर्णतः नाश होने वाला है जिससे पुनः जन्म की भी आशा नहीं रह सकती।

अभी जो स्थिति है वह भिन्न है और उसे समझने की आप कोशिश करिए। श्री कृष्णजी ने कहा है कि, "यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत, परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृतां संभवामि युगे युगे।" अब इस श्लोक के आखरी लाइन में श्री कृष्ण कहते हैं कि "विनाशायच दुष्कृतां" मतलब दुष्ट लोगों का बुरी प्रवृत्तियों का नाश करने के लिए, और आगे वे कहते हैं कि साधू और संतों को बचाने के लिए मैं पुनः जन्म लूंगा। 'कलियुग में सीधा सादा, भोला साधू-सन्त मनुष्य मिलना मुश्किल है क्योंकि अनेक राक्षसों ने मनुष्य की खोपड़ी में प्रवेश किया है। इसलिए धर्म के नाम पर राजनीति में, शास्त्रों में, शैक्षणिक क्षेत्र में हर-एक क्षेत्र में हम अच्छे मनुष्य के बदले बुरे मनुष्य पर विश्वास करते हैं। जो बुरे काम करता है उसकी जय-जय करते हैं। एक बार जब हमने बुरे मनुष्य का साथ दिया कि अपनी प्रवृत्ति भी अनजाने में गलत बातों की तरफ बढ़ने लगती है और ये सब आपकी बुद्धि में इस तरह जड़ होकर बैठता है कि आप अपने आपको उस जड़ता की तरफ से हटा नहीं सकते। फिर उस दुष्कृत्यों से आप कैसे मुक्त होंगे ? या उन दुष्कृत्यों को कैसे नष्ट करोगे ? आप एक बहुत अच्छे स्वभाव के और बड़े इंसान हो, परन्तु आपकी खोपड़ी में दुष्कृत्य भी जड़स्वरूप

में बैठी है, तब आपका भी विनाश होगा। इससे कोई मनुष्य सचमुच परमेश्वर प्राप्ति के लिए पोषक या विरोधक है ये कहने के लिए ठोस नियम नहीं कहा जाएगा। केवल सहजयोग से ही मनुष्य की सफाई होगी और उससे वह व्यक्ति परमेश्वर प्राप्ति के लिए पोषक बनाया जा सकता है। ये एक ही बात ऐसी है कि जिससे आपकी अंकुर शक्ति प्रस्फुटित होकर आपको आत्म साक्षात्कार प्राप्त करा सकती है। आप स्वयं को, माने अपने 'स्व' को, जान सकते हैं और उसी का आनन्द लुटा सकते हैं। जिस समय ऐसा आनन्द मिलता है उस समय और मिथ्या बातें अपने आप ही अलग हो जाती है। आपमें जो भ्रम है वह नहीं रहेगा। और इसलिए आप अपना समय नष्ट नहीं करके तुरन्त पूर्ण श्रद्धा से 'सहजयोग' को स्वीकार करिए। यह अत्यंत आवश्यक है। इससे भूतकाल में हुई गलतियाँ, पाप इन सबसे आपको मुक्ति मिलेगी। ये एक ही बात ऐसी है कि जो आप अपने मित्रों को, रिश्तेदारों को और सभी को दे सकते हैं।

कुछ लोग, लोगों को खाना खाने को आमंत्रित करते हैं, ज्यादा से ज्यादा किसी के जन्म दिवस पर उसे केक देंगे या कुछ उपहार देंगे। क्रिसमस के समय लंदन में शुभेच्छा कार्ड भेजने की प्रथा है। तब पोस्ट ऑफिस में ऐसे कार्डों का ढेर लगता है। तब और चिट्ठियाँ लोगों को १०-१० दिन नहीं मिलतीं। इन सबमें यीशू के जन्मोत्सव पर वहाँ के लोग श्री यीशू को पूर्णतः भूले हैं। उल्टे श्री यीशू के जन्म दिन पर वहाँ के लोग शंपेन नाम की शराब पीते हैं। इतने महामूर्ख लोग हैं, कोई मरेगा तब वे शंपेन पिएंगे। इतनी गंदगी है कि शंपेन पीना तो उनका धर्म हो गया है।

उनको परमेश्वर की समझ नहीं। और समझेंगे भी कैसे ? परमेश्वर के बारे में उनके मन में कपोल कल्पित मिथ्या विचार है। आप बहुत सावधान और सजग रहिए। अपने आप से ही मत खेलिए। 'स्वयं' का नाश मत करिए। तुरन्त उठिए, जागृत हो जाइए। मेरे पास आइए, मैं आपकी मदद करूंगी। मैं आपके लिए रात-दिन मेहनत करने के लिए तैयार हूँ। मैं आपके लिए पूरी तरह कोशिश करूंगी, आपको अच्छा बनाने के लिए। आपको परमेश्वर प्राप्ति के मार्ग पर लाने के लिए मैं सारी कोशिशें करूंगी।

परमेश्वर प्राप्ति के लिए अन्तिम परीक्षा पास करने के लिए मैं आपके लिए मेहनत करूंगी। परन्तु इसमें आपको मुझे सहयोग देना होगा। ये सब प्राप्त करने के लिए आपको भी सर्वोपरि कोशिश करनी होगी और अपने जीवन का ज्यादा से ज्यादा समय सहजयोग में व्यतीत करना चाहिए। सहजयोग जो बहुत ही कीमती है, जो बहुत महान है। वह प्राप्त करने के लिए, और प्राप्त होने के बाद आत्मसात करने के लिए, आप अपना समय उसे दीजिए।

अब तक जो सहजयोग में कहा गया है वह सभी जीवंत प्रक्रिया है। जिस समय नये लोगों का सहजयोग की तरफ बढ़ना बिलकुल खत्म हो जाएगा उस समय कल्की शक्ति का अवतरण होगा, तो देखते हैं सहजयोग की तरफ कितने लोग बढ़ते हैं। अर्थात् कितने लोग आएंगे, उसकी भी मर्यादा है। इसलिए मैं फिर एक बार आपसे विनती करती हूँ। आपका जितना भी मित्र परिवार है, रिश्तेदार हैं, अड़ौसी-पड़ौसी हैं उन सबको लेकर आप सहजयोग में आइए।

जब इस बंबई में बहुत से लोग अपार श्रद्धा से, गंभीरता से सहजयोग में प्रस्थापित होंगे, सहजयोग में आकर प्यार से मिल-जुलकर रहेंगे उसी समय मुझे बहुत खुशी होगी। इस बम्बई में सारे भारत देश के हजारों बुद्धिमान और सात्विक लोग हैं जो इस भारत भूमि के भूषण हैं। पर वे अभी भी हृदय से छोटे हैं। उन्हें मुझे ये ऊपर बतायी गई बातें जरूर कहनी हैं। क्योंकि अब थोड़े ही समय

में बहुत-सी मुश्किलें आने वाली है। मैं प्रार्थना करती हूँ कि ऐसे संकटों की शुरूआत बंबई से ना हो। बम्बई तो एक-दो बार मुश्किलों से बची है। तो अब सावधान रहिए।

दूसरी बात ये कि, अभी तक बंबई के लोगों को पता नहीं उनके ऊपर कौन-सी बड़ी मुश्किल आकर गिरने वाली है। उन्हें ये भी पता नहीं कि परमेश्वर समस्त मानव को अमीबा से मनुष्य की स्थिति तक कैसे लाया है। परमेश्वर प्राप्ति के मार्ग में एक दुर्दैवी ये है कि इस देश के सभी लोग बंबई के लोगों का अनुकरण करते हैं। बहुत से लोग परमेश्वर प्राप्ति के लिए यत्न करने के बजाय सिने नट या नटीयों (film actors or actresses) का अनुकरण करने में मग्न हैं। ये सब स्वभाव की उथलता है।

श्री कल्की शक्ति का स्थान आपके कपाल के भाल प्रदेश पर है। जिस समय कल्की चक्र पकड़ा जाता है उस समय ऐसे लोगों का पूरा सिर भारी होता है। कुण्डलिनी को अपने उस चक्र के आगे नहीं ले जा सकते। ऐसे मनुष्य में कुण्डलिनी ज्यादा से ज्यादा आज्ञा चक्र तक आ सकती है। परन्तु फिर से कुण्डलिनी नीचे जा गिरती है। अगर आपने अपना सिर गलत लोग या अगुरूओं के पाँव पर रखा होगा तो आपकी भी स्थिति ऐसी हो सकती है। इसलिए श्री कल्की शक्ति का एक हिस्सा खराब हो सकता है और इससे एक तरफ का असंतुलन निर्माण हो सकता है। पूरे कपाल पर अगर एक-दो फोड़े होंगे तो समझना चाहिए कि अपना कल्की चक्र खराब है। अगर कल्की चक्र खराब होगा तो ऐसे व्यक्ति पर निश्चित ही बहुत बड़ी मुश्किल (आपत्ति) आने वाली है। जिस समय अपने कल्की चक्र पर पकड़ होगी उस समय अपने हाथ की सभी उंगलियों पर और हथेली पर और पूरे बदन पर साधारण से ज्यादा गर्मी लगती है। किसी व्यक्ति में श्री कल्की शक्ति के चक्र में पकड़ होगी तो ऐसा व्यक्ति कर्करोग या महारोग इस तरह की बीमारियों से पीड़ित होगा या ऐसे व्यक्ति पर महाआपत्ति आने की सूचना है। इसलिए श्री कल्की चक्र को बहुत साफ रखना पड़ेगा। इस चक्र में ग्यारह और चक्र हैं। ये चक्र साफ रखने के लिए इस चक्र के ग्यारह चक्रों में ज्यादा से ज्यादा चक्र साफ रखना बहुत जरूरी है। उनकी वजह से और छोटे छोटे चक्र चालित कर पाते हैं। अगर पूरे के पूरे ग्यारह चक्रों पर पकड़ होगी तो ऐसे व्यक्तिओं को आत्म-साक्षात्कार देना बहुत ही कठिन होता है।

अब श्री कल्की का चक्र साफ रखने के लिए क्या करना है वह देखते हैं। सर्वप्रथम हमें परमेश्वर के प्रति अत्यंत आदर, प्रेम और उनके प्रति आदरयुक्त भय (awe) दोनों ही चाहिए। अगर आपको परमेश्वर के प्रति प्यार नहीं होगा, आदर नहीं होगा या कोई गलती या पाप करते समय परमेश्वर का भय नहीं लग रहा है, उस समय श्री कल्की शक्ति अपने अति क्षोभ से (क्रोध से) सिद्ध है, सज्ज है। अगर आप गलती कर रहे हो और उसके प्रति आपके मन में परमेश्वर का जरा भी डर या भय नहीं है तो समझ लीजिए आपके लिए ये दैवत्वा (divinity) बहुत ही जहाल हैं। आप अगर पाप कर रहे हैं या गलती करते हैं तो उसमें मुझसे या और किसी से छिपाने की जरूरत नहीं है। अब अपने आपको ये मालूम है कि आप ये गलत काम कर रहे हैं। अगर आप पाप कर रहे हों और आपके हृदय में आपको महसूस हो रहा है कि हम पाप कर रहे हैं तो कृपा कर के ऐसा कुछ मत करिए।

जिस समय आपका परमेश्वर के प्रति आदर, भय और प्रेम रहता है उस समय आप जानते हैं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, वही हमारी देख भाल कर रहा है, और वही हमारा उद्धार कर रहा है। वे उनकी शक्ति के कारण हमारे ऊपर कृपा-आशीर्वाद की वर्षा करते हैं। परमेश्वर बहुत करुणामय है, कितने करुणामय हैं इसकी आप

कल्पना नहीं कर सकते। वे करुणा के सागर हैं। परन्तु वे जितने करुणामय हैं उतने ही वे क्रुद्ध भी हैं। अगर उनका कोप हो गया तो बचना बड़ा मुश्किल हैं। फिर उन्हें कोई नहीं रोक सकता। मेरे प्यार की आवाज भी उस समय नहीं सुनी जाएगी। क्योंकि वे उस समय कह सकते हैं कि "मां, आपने बच्चों को छूट दे दी और बच्चे बिगड़ गये।" इसलिए मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि कोई भी गलत या बुरे कृत्य मत करो। उससे मेरे नाम पर बुराई मत लाओ। आपकी माँ का हृदय इतना प्रेम से भरा, इतना नाजुक है कि ये सारी बातें आपको बताते हुए भी मुझे मुश्किल लगता है। मैं फिर से आपको विनती करके बताती हूँ कि अब व्यर्थ समय मत बर्बाद कीजिए क्योंकि पितामह परमेश्वर बहुत कुपित हैं। आपने अगर कोई बुरा कृत्य किया तो वे आपको सजा देंगे। परन्तु अगर आपने उनके लिए या अपने स्वयं के आत्म-साक्षात्कार के लिए कुछ किया तब आप को परमेश्वर के राज्य में अति उच्च पद मिलेगा।

आज आप करोड़पति होंगे, आप बहुत अमीर होंगे या बहुत बड़े पुजारी या वैसे ही कुछ होंगे परन्तु जो परमेश्वर को प्रिय है, जो मान्य है, उन्हीं को परमेश्वर के राज्य में उच्चतम पद पर विराजमान किया जाएगा। आप रईस या लखोंपती बनने पर आप को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश है, ये अगर आपका विचार होगा तो वह बहुत गलत है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि 'परमेश्वर' प्राप्ति के लिए हम कहाँ हैं ये देखकर प्रथम अपना परमेश्वर से संबंध घटित होना आवश्यक है। स्वयं की आत्मा कहाँ है ? परमेश्वर से हम किस तरह संबंधित हो सकते हैं, इन सारी बातों का रहस्य सहजयोग को प्राप्त होने के बाद ही होता है। साधकों को सहजयोग में आकर अपना सर्वोपरि उत्कर्ष साधकर अपना कल्याण कर लेना चाहिए।

सभी को अनन्त आशीर्वाद।

परमपूज्य श्री माताजी के मराठी भाषण का हिन्दी अनुवाद

With best compliments from :

McDOWELL & CO. LTD.

(Fast Food Division)

PLOT NO. 5, SAKET, NEW DELHI

॥ जय श्री माता जी ॥

★ निर्मल वाणी ★

१. सहजयोग में पार होने के बाद बनना पड़ता है। बगैर बने सहजयोग हाथ नहीं लगता। मां ने आपको पानी में उतार दिया, लेकिन तैराक बन करके भी आपको सीखना होगा कि आप दूसरों को कैसे तैरना सिखा सकते हैं। आपको पूरी तरह से बनना पड़ता है।

❀ ❀ ❀

२. सहजयोग का तरीका है कि पहले अपने आदर्श से, अपने व्यक्तित्व से दूसरों को प्रभावित करना। जब दूसरा प्रभावित हो जाए तो धीरे-धीरे उसे सहज में लाओ। पूर्ण स्वतन्त्रता में आना होता है। आज नहीं कल ठीक हो जाएगा। ये ख्याल रखना चाहिए कि जब हम बन रहे हैं तो हमारे साथ 'अनेक' बन रहे हैं। और वो जो अनेक हैं उनकी दृष्टि हमारे ऊपर है। हम कैसे बन रहे हैं ये बहुत जरूरी चीज है।

❀ ❀ ❀

३. एक सहजयोगी को एकदम निश्चित मति से ध्यान में बैठना बहुत बड़ी चीज है। ध्यान में गति करना यही आपका कार्य है। और कुछ भी आपका कार्य नहीं है। बाकी सब हो रहा है। ध्यान में बढ़ने के लिए एक गुण बहुत जरूरी है। उसको कहते हैं Innocence—भोलापन, स्वच्छ, एक छोटे बच्चे जैसा— "पूर्णतया Innocent होना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए, इससे आपका आज्ञा चक्र भी एकदम 'साफ' हो जाएगा।

❀ ❀ ❀

४. आप जो भी कहेंगे वही परमात्मा आप के साथ करेगा। आप उससे कहेंगे "शांति दो" "संतोष दो" "मेरे अंदर सुन्दर चरित्र दो", "मेरे अन्दर प्रेम दो", "मुझे माधुर्य दो, मिठास दो।" जो भी उनसे मांगोगे, वो तुम्हें देगा। और कुछ नहीं अपने लिए मांगो—"मुझे अपने चरणों में समा लो।" "मेरी इस बूंद को अपने सागर में समा लो।" "जो भी कुछ मेरे अन्दर अशुद्ध है, उसे निकाल दो।" उससे प्रार्थना करिए—"मुझे विशाल करो। मुझे समझदार करो। तुम्हारी चेतना मुझे दो। तुम्हारा ज्ञान मुझे बताओ। सारे संसार में प्रेम का राज्य हो। उसके लिए मेरा दीप जलने दो। उसी में ये शरीर, मन, हृदय रत रहे।"

इस तरह सुन्दर सुन्दर बातें उस परमात्मा से मांगो। तुम असुन्दर मांगते हो तो भी वो दे ही देता है। लेकिन जो असली है वह मांगो तो क्या वह नहीं देगा? यूं ही ऊपरी तरह से नहीं, "अन्दर से" आंतरिक हो करके मांगो।

❀ ❀ ❀

५. अहंकार एक दीर्घकाय समस्या है। इसका समाधान दूसरों को क्षमा करना है। आपको क्षमा करना सीखना चाहिए। प्रातःकाल से संध्या तक क्षमाप्रार्थी बने रहें और अपने दोनों कानों को खींचें, और कहें कि हे परमात्मा हमें क्षमा करें। प्रातःकाल से सायंकाल तक उसका स्मरण करते रहें। सदा याद करने से जेसस क्राइस्ट आपके अहंकार को नीचे ले आयेंगे।

❀ ❀ ❀

६. जो आदमी सहजयोगी है उसे वीरतापूर्वक अपने मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए। कितनी भी रुकावटें आयें। घरवाले हैं, परिवार वाले हैं, ये हैं, वो हैं, तमाशे हैं, इनका कोई मतलब नहीं। इस जन्म में आपको पाना है और आपके पाने से और लोग पा गये तो उनका धन्य है, उनका भाग्य है। नहीं पा गये तो आप क्या उनको अपने हाथ से पकड़कर ऊपर ले जाओगे? यह तो ऐसा हो गया कि आप समुद्र में जायें और अपने पैरों में बड़े बड़े पत्थर जोड़ लें और कहें कि 'समुद्र देखो, मुझे तो तैराकर ले जाओ। समुद्र कहेगा कि, "भई, ये पत्थर तो छोड़ो पहले पैर के, नहीं तो कैसे ले जाऊँगा, मैं? पैर में आपने बड़े-बड़े भार बांध दिये तो उनको कटवा ही देना अच्छा है। और नहीं कटा सकते तो इतना तो करो कि उनसे परे रहो। इस तरह की चीजें जो आपने पैर में बांध रखी हैं, उसे एकदम तोड़-तोड़कर ऊपर उठ जाओ। ऐसी कितनी बाधायें हैं और यह फालतू की बाधायें लगा लेने से कोई फायदा नहीं।

❀ ❀ ❀

७. अन्त में यही कहना चाहिये कि जिस मस्तिष्क में, जिस सहस्रार में प्रेम नहीं हो वहाँ हमारा वास नहीं है। दिमाग में सिर्फ़ प्रेम ही की बात आनी चाहिए कि प्रेम के लक्षण में क्या करना है। यही सोचना चाहिए कि सारी चीज मैं प्रेम में कर रहा हूँ? मेरा ये सब कुछ बोलना, करना-धरना क्या प्रेम में हो रहा है? किसी को मार-पीट भी सकते हैं आप प्रेम में। इसमें हर्ज़ नहीं। अगर झूठ बात हो तो मार सकते हैं, कोई हर्ज नहीं। लेकिन यह क्या प्रेम में हो रहा है। जिससे किसी का हित हो वही प्रेम है। तो क्या आप इस तरह का प्रेम कर रहे हैं कि जिससे उनका हित हो? एक ही शक्ति है 'प्रेम', जिससे आकारित होने से सब चीज सुन्दर, सुडौल और व्यवस्थित हो सकती है।

❀ ❀ ❀

८. यदि आपको 'निः' भावना अपने अन्दर प्रतिष्ठित करनी है तो जब भी आपके मन में विचार आये

तो कहिये "यह कुछ नहीं है। यह सब भ्रम है, मिथ्या है।" आपको बारम्बार यह भाव लाना है। अतः दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि यह सब "कुछ नहीं" है। केवल ब्रह्म सत्य है, अन्य सब मिथ्या है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको यह दृष्टिकोण अपनाना है, तब आप सहजयोग को समझेंगे।

❀ ❀ ❀

९. मेरा हृदय, मन, शरीर हर समय आप ही की सेवा में संलग्न है। वह एक पल भी आपसे दूर नहीं है। जब भी आप मुझे सिर्फ आँख बंद करके याद कर लें उसी वक्त मैं पूर्ण शान्ति लेकर के, एक क्षण भी विलम्ब नहीं लगेगा, लेकिन आप को मेरा होना पड़ेगा, ये जरूरी है, अगर आप मेरे हैं तो एक क्षण भी मुझे नहीं लगेगा, मैं आपके पास आ जाऊँगी।

❀ ❀ ❀

१०. मैंने आपको हिसाब किताब बताया है। तन्त्र अपना साफ रखो और रास्ता अपना ऊपर का देखो, नीचे का नहीं।

❀ ❀ ❀

११. सहजयोगी को संतुष्टता इसके आसपास के वातावरण पर निर्भर नहीं है। वातावरण कैसा भी क्यों न हो, वह उसे सुखदायी ही लगना चाहिए।

❀ ❀ ❀

१२. "आप अपने हृदय में विनम्र होइए। आपका हृदय आपकी आत्मा है।"

❀ ❀ ❀

१३. "प्रातः से सन्ध्या तक क्षमाप्रार्थी बने रहें और अपने दोनों कानों को खींचें और कहें कि 'हे परमात्मा हमें क्षमा करें'। प्रातः से सन्ध्या तक उसका स्मरण करते रहें। सदा याद करने से श्री जेसस क्राइस्ट आपके अहंकार को नीचे ले आयेंगे।"

❀ ❀ ❀

१४. "समस्त बुराइयाँ आज्ञा चक्र में एकत्र होती हैं अतः आपको अपनी आंखों को स्वच्छ रखने के लिए अपनी आज्ञा को साफ करना होगा।"

卐 जय माता जी 卐

आत्म कथ्य

अपने आपके अहं को, कभी न समझो मीत।
छद्मवेश में रह कर, करता है यह प्रीत ॥१॥

कोई नहीं है शत्रु, कोई नहीं है मीत।
अपने अहं को जीतना, है यही सच्ची जीत ॥२॥

अपने अहं पर रखो, हरदम कड़ी नजर।
अपने व्यवहार से कभी, रहो न बेखबर ॥३॥

'स्व' से लड़ना 'स्व' को जीतना, है सहज सिद्धान्त।
फिर 'स्व' से करना मित्रता, तब होता मन शांत ॥४॥

स्वयं ही शत्रु, स्वयं मित्र, स्वयं सब समर्थ।
स्वयं को ही जीतना, है जीवन का अर्थ ॥५॥

सहज की शक्ति से, करो स्वयं का सुधार।
स्वयं ही तू कर सकता, है अपना उद्धार ॥६॥

कथनी करनी में भला, क्यों रखते हो फर्क।
बढ़ता अविश्वास इससे, जीवन होता नर्क ॥७॥

सहज में रहना सीखो, हरदम रहो सतर्क।
अपने ही बंधुओं से, करो न कुतर्क ॥८॥

विचारों, वचनों, करतूतों से, क्यों पहुँचाते ठेस।
क्या यही शिष्टता तेरी, देना खुद को क्लेस ॥९॥

प्रिय-वाणी बोलना, है सहज का आनन्द।
सुख-शांति में किसे, जीना नहीं पसंद ॥१०॥

विनम्र, शांत, सौम्य, शिष्ट, हो तेरा व्यवहार।
खान-पान, वचन में, संतुलन ही है सार ॥११॥

आत्म-चिन्तन, आत्म परीक्षण, रहना स्वच्छंद।
होकर आत्म परायण, लूटो जीवन का आनन्द ॥१२॥

"स्वार्थ को पाना ही, इस तन का सदुपयोग।
त्याग आलस्यता को, करो निरंतर सहजयोग ॥१२॥

मंदिर, मसजिद गिरजा, इस तन को जान।
आत्मा ही परमात्मा, और न दूजो भगवान ॥१३॥

तन, मन, भाव, निर्मल, निर्मल चित और धाम।
वचन, विचार, वातावरण, निर्मल हों सब काम ॥१४॥

सहजयोग के अभ्यास से, धुल जाते सब मैल।
'निर्मल चित्' में देखिये, सृष्टि का सब खेल ॥१५॥

पाया आत्म-साक्षात्कार अर्जुन, देखा रूप विराट।
अद्भुत लीलधारी श्री कृष्ण ही, सकल सृष्टि-सम्राट ॥१६॥

परमेश्वरि आदिशक्ति की, है यह अनुपम लीला।
शक्ति, भक्ति, मुक्ति सहज में, देतीं माँ निर्मला ॥१७॥

कविता

मंडराये जब बादल काले,
घनघोर अँधेरा छाये।
जब पंथ सूझ नहि पाये,
भटकी मानवता घबराये ॥१॥

तब सहज संकेत तेरा,
जग को राह दिखाये।
तेरी रोशनी की किरणें,
जीवन-पथ, उज्ज्वल बनायें ॥२॥

सारी दुनियाँ तेरा गुलिस्ताँ,
जब तेरे गुल मुरझायें।
तब तूने जीवनामृत सींचा,
वन उपवन लहरायें ॥३॥

फिर बरसे बरसात,
हरी-भरी हुई धरा।
पान कर प्रेमामृत का
जीवन अब आनंद भरा ॥४॥

卐 जय निर्मला माता 卐

भजन

हे माँ ! हम सब तेरे ।
तेरी शरण में आये ।
तेरा प्रेम पाये ॥
दुख दूर हुए हमारे ॥ हे माँ ! ॥१॥

तन स्वस्थ हुआ ।
मन मुक्त हुआ ॥
हृदय आह्लादित हुआ ।
जीवन उन्मुक्त हुआ ॥
पाये जब दर्शन तेरे ॥ हे माँ ! ॥२॥

चाह गई चिन्ता हटी ।
भय-शोक सब यातनाएं मिटीं ॥
फांद गये भव घेरे ॥ हे माँ ! ॥३॥

कट गया माया-जाल ।
जल गये जग-जंजाल ॥
छूट गये अब जन्म-जन्म के फेरे ॥ हे माँ ! ॥४॥

हट गया तम का आवरण ।
हुआ आलोकित कण कण ॥
अब दूर हुए अंधेरे ॥ हे माँ ! ॥५॥

पवित्र आत्मा का दर्शन मिला ।
अनंत जीवन का कमल खिला ॥
प्रभु के साम्राज्य में हैं आनंद घनेरे ॥ हे माँ ! ॥६॥

जय माता जी !

"सहजयोग में आने के बाद धर्म का साँचा बन जाता है । आपको ज्यादा प्रयास नहीं करना पड़ता है । मनुष्य में अपने आप शुद्धता, पवित्रता जागृत होती है । उसे दूसरी स्त्रियों के प्रति कोई आकर्षण नहीं रहता क्योंकि वह समाधानी हो जाता है ।" —श्री माताजी

"जब ब्रह्मतत्व जागृत होता है तब अपने पूरे कार्यक्षेत्र में जो कुछ भी हम करते हैं उसमें एक प्रकार की तेजस्विता आती है और उस कृति में एक प्रकार की शिष्टता आ जाती है ।" —श्री माताजी

卐 जय श्री माता जी 卐

मानव चेतना यंत्र

मानव तन सदृश, और न कोई यंत्र।
सर्वोत्तम यह यंत्र है, यंत्रों का निर्माता यंत्र ॥१॥

'स्व' के तंत्र से, स्वचालित यह यंत्र ।
स्वतंत्रता ही आनन्द, मत बन तू परतंत्र ॥२॥

अपने आप के यंत्र का, निरंतर करो विकास।
भौतिक यंत्रों के पीछे, क्यों करता उसका नास ॥३॥

दूर देश के दृश्य को, दिखाता दूर-दर्शन।
पर मानव तन यंत्र में, होता सृष्टि-दर्शन ॥४॥

उदर पैठ शिशु राम के, देखा अगणित ब्रह्माण्ड।
विस्मित, विनीत कागभुशुंडि, पाया भक्ति अखंड ॥५॥

आश्चर्य चकित माँ यशुमति, लखि बाल कृष्ण मुखमांहि।
सकल जगत सचराचर, अद्भुत अपूर्व दिखाँहि ॥६॥

मानव चेतन यंत्र के, ऊँचे हैं आयाम।
आत्मा के क्षेत्र में, करता है यह काम ॥७॥

सहजयोग चेतना का, है प्रयोग अद्भुत।
करते रिकार्ड 'परम' का, विज्ञानी जीवनमुक्त ॥८॥

टी० वी०, कैमरा, टेपरिकार्डर, कार, फ्रिज और वाच।
आधुनिक फैशन-परस्ती, सबको नचाये नाच ॥९॥

मानव तन सदृश, कोई नही है यंत्र।
शांति की ध्वनि सुने, खींचे अलख का चित्र ॥१०॥

इन तन के रहते ही, है जड़ चीजों का अर्थ।
इसके जाते ही, हो जाते सब व्यर्थ ॥११॥

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

卐 जय श्री माता जी 卐

"अनंत जीवन" के गीत

(१)

हे माँ ! तेरी वीणा के,
स्वर बन जायें।
मधुर संगीत से जग को,
मंत्र मुग्ध कर जायें ॥१॥

तेरी मुरली की तान बन,
ग्वाल बालों को बुलायें।
हे लीलामयी, तेरी लीला में,
आनंद मग्न हो जायें ॥२॥

प्रेम पवन बन कर,
सारे जग में लहरायें।
तेरे उपवन के सुमन का,
सौरभ बन जग में भर जायें ॥३॥

बन कर तरंग प्रेम के,
संदेश तेरे पहुँचायें।
आकाश दीप बन कर,
सर्वत्र प्रकाश फैलायें ॥४॥

'अनंत जीवन' का पथ बन जायें।
हर भटके राही को राह दिखायें।
इस जीवन का अर्थ यही,
तेरी इच्छा में ढल जायें ॥५॥

(२)

हे माँ ! जीवन के,
हर पल का तुझे प्रणाम।
हर साँस में हो तेरे नाम,
हर गीत में तेरा गुणगान ॥१॥

कण-कण में तन के,
तेरे प्रेम का स्पन्दन।
चित् हो प्रकाशित,
वाणी में हो मुस्कान ॥२॥

जीवन को मुक्त दें,
हों ऐसे हमारे काम।
महकायें वातावरण
अज्ञात कमल अनाम ॥३॥

विविध विधि अभिव्यक्ति,
तेरी कला का नाम।
तेरी कृति की वाणी बन,
गायें मधुर गान ॥४॥

करें वितरण आनंद का,
जीवन बने महान।
'अनंत जीवन' के साम्राज्य में,
धरा बने स्वर्ग धाम ॥५॥

श्री० एल० पटे

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.